International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197, Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 1; Issue 11; November 2016; Page No. 53-54

नारी शक्ति की भूमिका

डॉ0 श्रीमती सुनीला एक्का

सहायक प्राध्यापक (राजनीतिशास्त्र), शासकीय महाविद्यालय, मरवाही, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत।

प्रस्तावना

वर्तमान् समय में घर एवं बाहर दोनों ही जगह नारी की भूमिका महत्वपूर्ण हुई है। परिवार जो कि समाज की प्रारंभिक इकाई होती है, में नारी की केन्द्रीय भूमिका होती है। वह परिवार को पूरी तरह से संभालती ही है, प्रथम वह गुरू के रूप में बच्चों को अच्छे संस्कार भी देती है, जो कि भविष्य में देश के कर्णधार बनकर राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान देते हैं। घर के बाहर भी नारी की भूमिका कमतर नहीं है। उसमें अंतरिक्ष की उड़ान भरकर पुरूषों के दंभ को तोड़ा है। अलग–अलग भूमिकाओं में यह समाज व राष्ट्र के प्रति अपने अवदान से अपनी उपादेयता को सुनिश्चित् कर रही है। देश की आजादी के बाद भारत के नवनिर्माण हेतु नारी सशक्तीकरण की आवश्यकता पड़ी। जब देश आजाद हुआ था, तब शिक्षा, अधिकार, हक, सहभागिता, निर्णयन, सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक आदि स्तरों पर भारतीय नारी पिछड़ी हुई थी और दमन, शोषण, भेद–भाव व असमानता की शिकार थी। उसे समाज में दोयन दर्जा प्राप्त था। इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखकर जहॉ भारतीय संविधान के अनुच्छेद 14 में महिलाओं एवं पुरूषों को राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक क्षेत्रों में समान अधिकार और अवसर प्रदान किये गये, वहीं अनुच्छेद 16 के जरिये रोजगार के समान अवसर भी प्रदान किये गये। महिलाओं को शोषण, भेद–भाव और दमन से बचाने के लिये विधिक संरक्षण प्रदान किया गया तथा उन्हें साक्षर बनाने के लिये सहशिक्षा के साथ–साथ लड़कियों के लिये पृथक विद्यालयों की व्यवस्था भी शासन द्वारा शुरू की गई।

नारी शक्ति की भूमिका

- वैदिक काल में स्त्री और पुरूष को समकक्ष माना जाता था, इस दौरान स्त्रियॉ सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक व धार्मिक कार्यों में पुरूषों के साथ बराबर की भागीदार थी। हिन्दू धर्म शास्त्रों में भी उन्हें शक्ति प्रतीक दुर्गा, धन की प्रतीक लक्ष्मी, विद्या की प्रतीक सरस्वती, अन्नपूर्णा माना जाता रहा है। ऋग्वेद में अनेक स्त्रियों के नाम मिलते हैं, जो विदूषी तथा दार्शनिक थी और उन्होंने कई मंत्रों एवं ऋचाओं की रचना की थी। विश्ववारा को ''ब्रम्हवाहिनी'' एवं ''मंत्रद्रष्टी'' कहा गया है, जिन्होंने ऋग्वेद के स्त्रोत की रचना की थी। घोष, लोपमुद्रा, शाश्वती, अपाला, निवारी, आदि विदूषी स्त्रियों के कई नाम मिलते हैं, जो वैदिक मंत्रों एवं स्त्रोतों के रचयिता हैं।
- उपनिषद् काल में मैत्रेयी, गार्गी आदि के नाम मिलते हैं, जिन्होंने दार्शनिकों की श्रेणी में अपने आपको स्थापित किया था। गार्गी ने उस समय के प्रख्यात दार्शनिक याज्ञवल्क्य से राजा जनक की सभा में गूढ़ दार्शनिक प्रश्नों पर वाद–विवाद किया था। अनेक शिक्षित महिलाओं ने अध्यापन का भी कार्य किया था।
- दूसरी सदी के ई.पू. में आंध्रसातवाहन वंशी राजमाता नायनिका ने अपने अल्पव्यस्क पुत्र को संरक्षण करते हुये स्वयं प्रशासन का भार संभाला था। इसी तरह वकाटकवंश की रानी तथा चंन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य की पुत्री प्रभावती गुप्ता ने अपने पति की मृत्यु के पश्चात् पुत्र की अल्पव्यस्कतावश स्वयं शासन किया था।
- मध्य काल में भी अनेक महिलाओं ने शीर्ष पदों पर पुरूषों के समान व राजनीति में अपनी प्रभावशाली उपस्थित दर्ज कराई। रजिया सुल्तान ने रूढ़ीवादी सामाजिक व्यवस्था के बीच शासन के शीर्ष पदों को सुशोभित किया। उन्होंने सुल्तान के पद को धारण कर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया। आगे चलकर रानी कर्णवती, रानी जोधा बाई, जेबुन्निसा, शिवाजी की मॉ जीजा बाई आदि ऐसी स्त्रियॉ थी, जिन्होंने अपने समय की राजनीति और समाज को प्रभावित किया।
- स्वतंत्रता संघर्ष में व उस समय महिलाओं के योगदान को अनदेखा नहीं किया जा सकता है। सरोजनी नायडू, मीरा बेन, सुचेता कृपालानी, विजयलक्ष्मी पंडित, अरूणाआसफ अली आदि ने आजादी की प्राप्ति के लिये बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
- आर्थिक क्षेत्र में भी महिलायें अपनी सफलता का परचम लहरा रही हैं। देश के शीर्ष पदों पर कार्यरत् हैं तथा देश के विकास में अपना योगदान प्रदान कर रही हैं। वर्तमान् में देश के सार्वजनिक क्षेत्र के बड़े व्यापारिक बैंकों, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के चेयरमैन अरूंधती भट्टाचार्य हैं। इनके अलावा चन्दा कोचर, नैनीताल किदवई, सावित्री जिंदल आदि अलग–अलग संस्थानों को नेतृत्व प्रदान कर रहीं हैं।
- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में टेसी थामस का नाम उल्लेखनीय है, जिनकी देख–रेख में अग्नि–5 मिसाईल का निर्माण किया गया, इनको ''मिसाईल वूमैन'' के नाम से जाना जाता है। पर्यावरण के क्षेत्र में वंदना शिवा, सुनीता नारायण आदि का महत्वपूर्ण योगदान है। प्रशासनिक क्षेत्र में किरण बेदी, दीपक संधू, निरूपमा राव, गौरी शंकर आदि महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।
- छत्तीसगसढ़ के राजनीतिक पृष्ठभूमि में महिलाओं की भूमिका रही है। प्राचीनकाल में महारानी कौशल्या, आनंदी बाई, बस्तर की काकतीय रानी प्रफुल्ल कुमार देवी एवं सामाजिकता की प्रतीक बिलासा बाई केंवटीन, राधा बाई, राजमोहिनी देवी, केकती बाई बघेल आदि ने छत्तीसगढ़ के स्वाधीनता संघर्ष में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।
- आजादी के बाद संघीय व्यवस्था की शुरूआत हुई। उपरोक्त व्यवस्था में छत्तीसगढ़ की महिला राजनीतिज्ञों ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जिनमें सांसद मिनी माता का नाम प्रमुखता से लिया जाता है, जो 5 बार सांसद चुनी गई। रानी पदमावती 2 बार सांसद रही। छबीला नेताम, श्रीमती करूणा शुक्ला, सुश्री सरोज पाण्डेय, श्याम कुमारी देवी, कमला मनहर आदि लोकसभा की सदस्या रहीं हैं। सन् 2000 में भारतीय गणराज्य के रूप में पृथक छत्तीसगढ़ के महिला विधायकों में श्रीमती गीता देवी (केबिनेट मंत्री) डोंगरगॉव, फूलोदेवी नेताम् (केशकाल), प्रतिभा साहू (चित्रकोट), रानी रत्नमाला देवी (चन्द्रपुर), श्याम ध्रुव (कांकेर) विधायक रहीं।

- छत्तीसगढ़ के पंचायती राज व्यवस्था में महिला राजनीतिज्ञों ने अपनी सफल भूमिका निभाई है। पंचायती राज व्यवस्था के सफल क्रियान्वयन के पश्चात् विधान सभा में सफलतापूर्वक पहुँचने में अपनी प्रमुख भूमिका निभाई है। इनमें प्रेम बाई मण्डावी (ज.पं.अ. राजनांदगॉव), नीता लोधी भिलाई, छाया वर्मा (रायपुर), सराज पाण्डेय दुर्ग, लता उसेंडी, श्रीमती आराधना मरकाम, किरणमयी नायक आदि ने त्रिस्तरीय पंचायती राज प्रणाली में अपनी भूमिका को साबित किया है।

महिलायें समाज की रचनात्मक शक्ति होती है और यदि उनकी स्थिति समाज में अपेक्षित व कमजोर हो तो समाज यथेष्ठ विकास या प्रगति नहीं कर सकता। इसलिये महिलाओं के प्रति सामाजिक सोंच में तेजी से बदलाव लाने की जरूरत है। निःसंदेह इस दिशा में हम प्रगति कर रहे हैं, लेकिन यह प्रगति भी असंतुलित व एकांगी प्रतीत हो रही है। इसका कारण है, गॉवों–शहरों एवं अमीरी–गरीबी के खाचों में बटे भारतीय समाज के विकास के पैमाने के कारण अलग–अलग हो जाते हैं। इसलिये समाज के विकास में महिलाओं की भूमिका और अधिक प्रभावशाली बनाने के लिये सभी सामाजिक, आर्थिक पहलूओं पर तेजी से काम करना होगा।

संदर्भ सूची

1. चन्द्र विपीन/आधुनिक भारत का इतिहास।
2. शर्मा राम विकास/भारतीय इतिहास और ऐतिहासिक भौतिकवाद।
3. डॉ. अमरनाथ/नारी का मुक्ति संघर्ष